224
H

"Ag Ka Gola" pt II. Govt of the U.P. Hindi
8.5.41.
Recd 3
8-5-41.
224

॥ ॐ ॥

# आग का गोला

[ द्वितीय भाग ]

संग्रहकर्ता

सेवक कुन्दनलाल

ज़ि॰ पीलीभीत।

रमेश फाइन प्रिंटिंग वर्क्स, लखनऊ।

891.431
K916R

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 224
Date 4.12.71
GOVT. OF INDIA

# आग का गोला

---

## * किसानों की दशा *

परै दारुन शीत मही तल पै बहै शीतल तीषो व्यारी सरारी।
गर्जै बदरा चमकै दमकै बिजुराइ रहीं हैं बिजुरी बजमारी॥
बजनीले बड़े २ औरन की घन मंडल तै वर्षा भई भारी।
ठिठुरानि लगीं सबै आँगुरियाँ गया कांपि करेजो भरी सिसकारी॥
अब आओ चलें उत गाँव की ओर लखैं क्या हाल किसान को है।
नहिं बारह मास कबहुँ जिनको भरि पेट ठिकानो किसान को है॥
तन दूबरो रोगिल हाल बुरो मुखरा जिनके लरि कान को है।
नहिं पास है अंगा चिथरन को नित होत तगादो लगान को है॥
चले आगे लख्यो कछु दूरिहिं से परी फूस की झोपड़ी टूटी पुरानी।
चहुँ ओर दिवार है फूटी भई हैं बड़े २ छेद बड़ी बुरी छानी॥
नहिं नेकहु पौन रुकै जिहि में बरसात भये टपको करे पानी।
गरमिन मैं भीतर घाम घुसै दुखियारे किसान की है राजधानी॥
परो भीतर भूतल पै लरिका ढकी तापै पुरानी फटी सी दरी है।
बिछो नीचे बिछौना न जाके कछू नहिं पास में कोई दवाई धरी है॥
बहु दौस से मारो बिचारो हुतो अब आय गई मरिबे की घरी है।
पितु ठाड़ो ठगो सो विलोकै सबै महतारी अचेत ह्वै औंधी परी है॥

इतने में सिपाही दिखाई परो खरो द्वारे पै हो के अवाज लगाई ।
निकरो घर में से जबैं दुखिया तब भौंहें चढ़ाय के डाट बताई ॥
नहिं काहू दिना तैं बेगार करी नहिं दीनी लगान की एकौ पाई ।
सरकार ने तोहि बुलाओ अभै इतनी कही ठोकर एक जमाई ॥
कर जोरि करी बिनती उनकी बहु भांतिन सों दिनतहु दरसाई ।
पग धाय गहे तिनके अपने घर की सब हालत रोय सुनाई ॥
अबै मोरो लला मरिबो है परो लखो हीन दशा घर भीतर आई ।
तुम जाहु अभै अपने घर को मिलिहौं सरकार से द्वारे पै जाई ॥
सुनि दीन भरी बतियां तिहिकी अधरा फरकाय के भौंहें चढ़ाई ।
पथरा सों करेजो पसीजो नहीं रिसिआय के पीठ पै बेंत जमाई ॥
चुटिया गहि ऐंचि लियो भुइ पै हनि लात औ घूसा करी मन भाई ।
धरती पै घसीटत पीटत ताहि गयो सरकार के द्वारे सिधाई ॥

---

## ❀ ख़्वाब का जहरीला घर ❀

अफ़सोस थाम दिल घूंट लहू का पी करके कहना पड़ता ।
शांती के सभी पुजारी हैं इससे सब कुछ सहना पड़ता ॥
तेरे ही कारण बड़े बड़े योधा हमने बलिदान किये ।
उफ़ तक नहीं किया हमने देखा दुश्मन नादान किये ॥
है अभी वाकिया कल का यह पेशावर वीर पठानों का ।
कुर्बान किये औरत बच्चे जौहर देखो मर्दानों का ॥
हां खून के आँसू पी करके कीन्हा बलिदान भगतसिंह था ।
हँसते हँसते कुर्बान हुआ पञ्जाब का शेर भगतसिंह था ॥
उस कानपूर के बलवे का कारण ब्रिटिश सरकार रही ।
बलिदान दिया विद्यार्थियों ने नहिं जाँ उनको दरकार रही ॥

नहिं मोतीलाल मरा होता क्यों माँ पर लट्ठ चलाते तुम।
गर बेटा जेल न होता तो क्यों माँ का जिगर जलाते तुम॥
शांती सदा प्रहलाद रहे नरसिंह तुम्हारा साथी है।
क्या तुझे हुकूमत ख़बर नहीं जगदीश हमारा साथी है॥
तेरे ही कारण आज हाय जलिया का देखो हाल हुआ।
जिसकी गोदी में बलिदां देखो भैया मदनगोपाल हुआ॥
ये अत्याचार हैं बाहर के सुन लो अब जेल कथाओं को।
क्या २ हमपर नहिं बीती है सुनलो दुख भरी कथाओं को॥
जो घास पशू नहिं खाते हैं वीरों को खिलाई जाती है।
जेहि देख के मुख मोड़ें कुत्ते वह दाल पिलाई जाती है॥
पेशी हर बात में होती है जोड़े से सदा चलना पड़ता।
गर ध्यान न देते जोड़े पर छः बार बेंत सहना पड़ता॥
जो काम पशू के होते हैं वीरों से कराये जाते हैं।
मिलता सोने को कभी नहीं गिन्ती गिन गिन चिल्लाते हैं॥
अन्याय न जब देखा जाता गर बोल बीच में पड़ते हैं।
तो तनहाई मतभङ्गा मिलता अरु मारु बेंत की खाते हैं॥
ऐ शान्त सदा तेरे कारण भारत का यह दुख सहा गया।
यह दशा देखकर शान्त देव खूं उबल उबल रह जाता है॥
पुत्तू गांधी का शस्त्र अहिंसा हमको विजय दिलाता है।
हमें फरेबो जाल सिखा कर भाई से भाई लड़वाये॥
करके दख़ल मुल्क मेरे पर हमको ठेंगा दिखलाये।
अंग भंग करके किसने नन्दकुमार को फांसी दी॥
नाना बाजीराव पेशवा को किसने मारा धोखे से।
किसने रनजीतसिंह के बेटे को दिल्ली भिजवाया धोखे से॥
किसने कुंवर टिकेन्द्रसिंहजी मारा लक्ष्मीबाई झांसी को।
कुंवर सुरेश भक्त को बागी कहकर किसने मारा था॥

रानी मैनावती को बोलो जीते जी किसने जलवाया था।
अवध नवाब के घर में डाका रात को किसने डाला था॥
आसफुद्दौला की बूढ़ी मां का जेवर किसने उतारा था।
वाजिदअली शाह के घर का ताला किसने तोड़ा था॥
जंगल में ले जा करके मां बहनों को किसने छोड़ा था।
बच्चों की लाशें टाँग किर्च में शहर में कौन घुमाता था॥
आग लगा कर लूटा किसने जब सारा आलम सोता था।
थुकवा करके जमीं के ऊपर हमें चटाने वाला कौन।
पिता के आगे अक्षयकुमार की खाल खिचाने वाला कौन॥
बिन अपराध किसानों को तोपों से उड़ाने वाला कौन।
भारत को फिर रक्त के आंसू हाय रुलाने वाला कौन।
सी आर दास का दुनिया से नाम मिटाने वाला कौन॥
पञ्जाब केसरी वक्षस्थल पर लट्ठ चलाने वाला कौन।
२६ मई लखनऊ के अन्दर फैर कराने वाला कौन॥
२५ मई माल रोड पर लट्ठ चलाने वाला कौन।
२४ मार्च भगतसिंह दिवस को दंगा कराने वाला कौन॥
श्री गणेश शंकर विद्यार्थी का खून बहाने वाला कौन।
नाले की खोह में हमारे भाई किसने तोपे थे॥
अच्छन खां अरु शम्भू शुक्ल के सर रेती से रेते थे।
कानपूर में चालीस गज़ का गड्ढा किसने खोदा था॥
अस्तन काट नारियों के जीते जी किसने तोपा था।
पेड़ इलाहाबाद चौक के अभी गवाही देते हैं॥
खूनी दरवाजे देहली के घूट लहू का पीते हैं।
जलियां वाले बाग़ के अन्दर किसने बे कारण फायर की॥
है दिल दीवारों का भी धड़कता देख क्रूरता डायर की।
है अभी चीखती रात दिना हर एक आत्मा घायल की॥

मैं करूं कहाँ तक बयाँ यहाँ इस जात फिरङ्गी कायर की।
अब खुली आँख होगई नींद भारत के वीर सन्तानो की॥
जब तक तुझको मिटा न लूंगा किंचित चैन न पाऊँगा।
कठिन प्रतिज्ञा है वीरों की करके दृढ़ दिखलाऊंगा॥
करके स्वाधीन भूमि भारत को बिजय ध्वजा फहराऊँगा॥

---

## ❀ घट फूटेगा ❀

भारत में देखो अब फिर से महाभारत के आसार बने।
कौरव सेना संहारन को गांधी जी कृष्णमुरारि बने॥
उस कृष्ण महाभारत युग में रहे अर्जुन सखा तुम्हारे थे।
इस शांत महा आन्दोलन में अर्जुन से वीर जवाहर बने॥
पांडवों के बड़े रहे सब से राजा धर्म युधिष्ठिर थे।
सत्याग्रह आन्दोलन में फिर बल्लभ भाई सरदार बने॥
अर्जुन के साथ सदा रहता भाई भीम गदाधारी।
अब साथी महत्मा गांधी के सैयद अब्दुल गफ्फार बने॥
खाने को अन्न नहीं मिलता कर भूमि चुका देवें कैसे।
प्रजा पर अत्याचार करें दुर्योधन से जमींदार बने॥
कौरव सभा में साड़ी ल तौहीन द्रोपदी से की थी।
मां बहिनों की इज्जत लेते अब दुशासन थानेदार बने॥
उस युद्ध महाभारर युग में पांडवों के कैम्प थे जगह जगह।
भारत वीरों के कैम्प आज हर जिले में कारागार बने॥
तुम अन्न हिन्द का खाते हो और भारत ही में रहते हो।
मरने पर यहीं दफन होगे क्यों ग़ैर के नातेदार बने॥

बिन दुखी किसान से पलते हैं पेट सदा हत्यारों के ।
भेड़िया देखो सरकार के खुफिया मुखिया चौकीदार बने ।।
भारत में फूट फैल गई है फूट का द्वन्द भारी ।
जिस देश में वैदिक धर्म रहा उस देश में अत्याचार बने ।।

---

## ❀ किसान की अर्जी ❀

अब जेठ महीना आवा । सविता अगिनी बरसावै ।।
चीरौ ना गुरुगुच छोड़ैं । सब मनई घर माँ सोवैं ।।
हम पेट में पट्टी कस कर । दिन रात कुदार चलाइन ।।
फिर पछुये के धूरे पर । दस बिघहा खेत बनाइन ।।
दोनों पड़वा मचियाइन ।।
मुखिया की मांगि सिराइन । वैद्यानी घर का खाइन ।।
जब जमा धान जो हरषा । हम फूले नाहिं समाइन ।।
अब पहिल दौंगड़ा बर्षा । सब बाली बच्चन लेकर ।।
दस दिन मां खेत निराइन । बर्षा मूड़े पर बीतिन ।
देंही मां लागी काई । बंदरन सुअनन हरनन ते ।।
दिन राति रखावत बीतिन । घर मेहरी करै पिसौनी ।।
कुछ सामां कोदौं लावै । तहि की मरुमड़ा बनावै ।।
बिटवन का पेट जिआवै । जब लरिकन ते बचि पावै ।।
तब हमका आंटै परोहन । कबहुन कबहुन दै जावै ।।
मेरी बड़ी मेहरिया नीकी । पहिले वा मोहि खवावै ।।
ता पाछे बची खुची का । वा आपन भोग लगाइन ।।
मेहरी का भूख सतावै । तौ सरई भूनिन खावै ।।
ऊपर तलिया का पानी । डटि के तत्ता पी जावै ।।

तौ भूक नाहिं सियरावै। वह गूलर बीनन जावै ॥
जिमीदारै केर लरिकवा। सूदी बिटिया गरिआवै ॥
गूलर हातन तै छीनिन। ऊपर कुतवा हियरावै ॥
वह भैंसिन केर खिलावै। मेहरारू रोवत आवहि ॥
वह माथ ठोंकि कर रोइन। सब मरिगै तोर परोसी ॥
हमका न मौत पुछइया। वरमौ हैं कागद भूले ॥
जब धान फूल पर आवा। कुछ दुद्धा धाना परिगा ॥
एक रात भरे के अंदर। सब खेत में गंधी भरिगा ॥
सब चूसिन दुद्धा धाना। खाली बस थाली परिगा ॥
हम माथ ठोंकि कर रोइन। हमरे पर बिजली परिगा ॥
सब बाकी बचन लैकर। दस दिन मा खेत कौ काटिन ॥
गाहि मीजि सै लाइन। सब दस मन दाना पाइन ॥
ब्योसार चार मन लाइन। तहिको ड्योढ़ा दै आइन ॥
अब बचे चार मन दाना। तहिके भये तीन रुपैया ॥
लगान नगद दस बांधिस। नजराना ढाई रुपैया ॥
सब चन्दा चुंगी मिलिकर। चौदह रुपया दुइ आना ॥
जिलेदार बताइन खुलि के। पहिले कुरबरा का आवा ॥
वौ कहिस पोस द आवहु। हम बोले भइया आवहु ॥
वह दूरिहि से गरिआवै। तब कांपै लाग मेहरिया ॥
अब पोत कहां से आवहि। पीछिहि से थनैत आवा ॥
वह जूतहि काढ़िस उतरा। मेरी मुस्कैं बंधवाइन ॥
पीटित कुठार लौं लाइन। हमका मुर्गा बनवाइन ॥
पीठी पर ईंट धराइन। हम गऊ २ कर रोइन ॥
उन हँसि २ कोड़ जमाइन। तब पंडित कक्कू आइन ॥
उन हमका रोवत देखिन। उनहुन के आँसू आइन ॥
जिलेदार की कीन्ह खुशामद। हमका मोहलत दिलवाइन॥

बप्पा हम भातुहि खइहैं। हम बोले बिटवा तोरिहि ॥
खातिर का डकवा डरिहैं ॥
बहिनी बोली ऐ भैया। कालि दसेरह अहियै।
हमहू दुइ पैसा दै देउ। गंगा की परहि जैयें ॥
बिटिया बोली ऐ बप्पा। कलि दीवारी अहिऐं ॥
हमउन का भुरकी लै देउ । फिर धरस हाथ पीठो पर ॥
बप्पा ये कैसी बरतहि। हम बोले बहिना यह है ॥
खेती की जिन्दा शर्तें ॥
यह राय आज कह जगमें। सब बात करैहों पोचो ॥
बिटिया की फटी चिगरिया। बिटवा की फतुहैं नुचि गई ॥
मेहरी का चिथो लंहगटा। हमरोऊ सरो लगोंटा ॥
करऔ वहि लेन न पैहैं। हम कैसे पूत जिअइहैं ॥
यह तै मन मेरे आवै। तुम बैठों लल्ला घर मां ॥
हम डूबि मरैं तलवा मां। सब सोख मोक मिटि जैये ॥
फिरि सोचिन जो हम डूबिहैं। थाने वाले सुनि पइहैं ॥
वह करिहैं खूब नवाबी। लरिका का वेंतन मरिहैं ॥
मेहरी का नंगा करि है। बिटिया की इज्जत हरिहैं ॥
पढ़वन की कुर्की करिहैं। या ते भी चुप्पे बैठो ॥
कबहुन दिन नीके अहिहैं। हम हूं इन आखिन दिखिहैं ॥
बिटऊ पिटऊ भरि खैहैं। हम सुनी जवाहर नेहरू ॥
फिरि से गद्दी पर अहिहैं। ऐसे कानून बनहि हैं ॥
हमरा दुख दारिद हरियैं। औरौ ते कछू कहतना ॥
मुल तुम गांधी के चिलवा। तहिते फरियाद सुनाइन ॥

—

## ❀ किसानों सुनो ❀

किसानौं हो जाओ तैयार।
पैदा करते अन्न तुम्ही हो मेहनत करते धन्य तुम्हीं हो
फिर भी क्यों भूखौं मरते हो सोचा किया विचार ॥ किसानौं० ॥
करते हो दिन रात परिश्रम खून जलाते बदले कणश्रम
दौलत वाले कहते हैं तुम कृषक आलसी यार ॥ किसानौं० ॥
खून बहा तुम राशि लगाते किन्तु दूसरे मौज उड़ाते
तुम भूखे नंगे रह जाते जीते किसी प्रकार ॥ किसानौं० ॥
गांव छोड़ शहरौं को जाते मिल में वही नौकरी पाते
कन्तु वहाँ से मासिक लाते मसज़ रुपल्ली चार ॥ किसानौं० ॥
वस्त्रों का भंडार लगाते सुन्दर सुन्दर उन्हें बनाते
अर्ध नग्न फिर भी रह जाते बच्चे तक सुकुमार ॥ किसानौं० ॥
किले चिनाते महल बनाते गारा ढो-ढो खून सुखाते
सुख से जिनमें मजे उड़ाते ज़मीदार सरदार ॥ किसानौं० ॥
अपने लिये फूस की कुटिया इधर उधर से टुटिया फुटिया
छोटी लुटिया टूटी खटिया में है जगत अपार ॥ किसानौं० ॥
कहते भाग्य तुम्हारा खोटा अपना बतलाते हैं मोटा
मोटा साले करके सोटा करलो भाग्य प्रसार ॥ किसानौं० ॥
कब तक तुम संतोष करोगे नरक यातना भोग करोगे
आख़िर कब तक सहे जाओगे यह सब अत्याचार ॥ किसानौं० ॥
पूँजीशाही शहंशाही दुष्ट पातकी भूतिशाही
खून चूसती नौकर शाही कर दो बेड़ा पार ॥ किसानौं० ॥
डरने की कुछ बात नहीं है खाने को कुछ पास नहीं है
ले लेने को किन्तु बड़ा है सारा यह संसार ॥ किसानौं० ॥
गाली गोली जेल कुछ नहीं पुलिस फ़ौज अरु रेल कुछ नहीं
साथी हैं सब ख़ौफ़ कुछ नहीं सब तेरा व्यापार ॥ किसानौं० ॥
लेकर झंडा लाल बढ़ चलो इकवाल का नार कर चलो
जग में अपना नाम कर चलो करो सैन्य संचार ॥ किसानौं० ॥

---